क्या एक और विभाजन ? 05
जिहादियों के प्रति न्यायालयों के रुख ? 07
सेवा करते बलिदान हुए स्वयंसेवक 10

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

# पाथेय कण

श्रावण शु. 11, वि.2081, युगाब्द 5126, 16 अगस्त, 2024

39 वर्षों से निरंतर

## बांग्लादेश में हिंदुओं की हत्या एवं उत्पीड़न क्यों ?

www.patheykan.com

patheykan@gmail.com @patheykanofficial @patheykanofficial @patheyofficial1 @patheykan

## आलेख बढ़ाए



16 जुलाई के अंक में हमेशा की तरह संपादकीय सुगढ़ता से परिपूर्ण दिखा। अंक में आलेख कम और समाचार अधिक होते हैं। समाचार निश्चय ही प्रासंगिक एवं उपयोगी हैं लेकिन मेरा सुझाव है कि इसमें आलेखों की संख्या बढ़ाई जाए। ये आलेख युवा और महिलाओं से जुड़े हुए भी हों। युवाओं के लिए उद्यम, कौशल, तकनीक, शिक्षा और रोजगार जैसे विषय नियमित रूप से हों। महिलाओं के लिए परिवार, संस्कृति, पाक कौशल, पुरातन महिलाओं की वैभवशाली कहानी आदि हो सकती हैं। मेरी दृष्टि में हमारी सनातनी संस्कृति की जड़ों को मजबूत बनाए रखने के लिए युवाओं और नारी शक्ति को जोड़ना बहुत आवश्यक है।

*-**डॉ. मनोज कुमार गुप्ता**, मालवीय नगर, जयपुर*

## संपादकीय

16 जुलाई के अंक में 'अंतिम हथियार' संपादकीय पढ़ा। जिस प्रकार से राहुल गांधी हिंदू धर्म के बारे में अनर्गल बयानबाजी कर रहे हैं तथा हिंदुओं की की एकता को तोड़ने के लिए नये-नये हथकंडे अपना रहे हैं, ये सभी किसी बहुत बढ़े षड्यंत्र की तैयारी लगती है। हिंदू समाज को इन सभी कृत्यों को गंभीरता से लेकर प्रतिउत्तर देना होगा तभी इन हिंदू द्रोहियों को होश आयेगा।

*-**सत्ताराम बेनीवाल**, वेडिया, सांचौर*

## जेएनयू में हिंदू अध्ययन केन्द्र

16 जुलाई के अंक में जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी में हिंदू अध्ययन केन्द्र की स्थापना का समाचार बेहद अच्छा व उत्साह बढ़ाने वाला था। यह विश्वविद्यालय भारत के केन्द्र में स्थित है। यहां की विचारधारा पूरे देश में अपना प्रभाव रखती है इसलिए वहां इसकी अत्यंत आवश्यकता थी।

*-**बालमुकुंद शर्मा**,*
*mukandsharma41@gmail.com*



भारत और हिंदू संस्कृति के विरोध का अड्डा बन चुके जेएनयू में हिंदू अध्ययन केन्द्र खुलना हम सभी के लिए गर्व की बात है। किसी समय यहां 'भारत तेरे टुकड़े होंगे' के नारे लगते थे। यह सब भारत की नई शिक्षा नीति और मजबूत केन्द्रीय नेतृत्व के चलते संभव हो पाया है।

*-**वासुदेव पोटलिया**, रामसर बाड़मेर*

## सारगर्भित संपादकीय

16 जुलाई के अंक में संपादकीय बहुत ही सारगर्भित तथा अनुकरणीय लगा। आज हिंदू समाज जाति-बिरादरी तथा मत -पंथों में बंटा हुआ है। इसीलिए राहुल गांधी, स्टालिन जैसे अनेक अपशब्दों का प्रयोग करते हैं फिर भी उनका व्यापक विरोध-प्रदर्शन नहीं होता है। कुछ संगठन ही आगे आते हैं। आज हम देखते हैं कि एक ही स्थान पर जातियों के हिसाब से मंदिर बने हैं, जाति के आधार पर श्मशानों को बांट रखा है तथा मतदान के समय भी हम जाति को महत्व देते हैं। जाति-बिरादरी से ऊपर उठकर राष्ट्र प्रथम को ध्यान में नहीं रखेंगे तब तक हिंदू समाज का अपमान होता रहेगा। धर्म सुरक्षित तो राष्ट्र सुरक्षित, राष्ट्र सुरक्षित तो हम व हमारी जाति, मत व पंथ सुरक्षित रहेंगे। इसके लिए 'अंतिम हथियार' के द्वारा इनको सबक सिखाना होगा।

*-**श्यामबिहारी सेन**, कोटा*

## बयान

राजकुमार रोत के 'आदिवासी हिंदू नहीं'। बयान के कारण ना केवल आदिवासी समाज में रोष है, बल्कि हिंदुत्व के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने वाले, भगवान बिरसा, गोविंद गुरु, टंट्या भील का अपमान कर संपूर्ण आदिवासी समाज को बदनाम किया जा रहा है।

राष्ट्र भक्त आदिवासी समाज हिंदू समाज का महत्वपूर्ण अंग है। उसे हिंदुत्व से दूर करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

*-**भरतलाल मीना**, रानीपुरा, करौली सपोटरा*

## पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें

(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- **सड़ांध मारती भारतीय शिक्षा व्यवस्था**
  https://patheykan.com/?p=28543
- **महर्षि चरक के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं**
  https://patheykan.com/?p=28565
- **एक बिटिया का उपनयन**
  https://patheykan.com/?p=28586


**पाथेय कण**

श्रावण शुक्ल 11 से
भाद्रपद कृष्ण 13 तक
विक्रम संवत 2081
युगाब्द 5126
16-31 अगस्त, 2024
वर्ष : 40 अंक : 10

सम्पादक : रामस्वरूप अग्रवाल
सह सम्पादक : मनोज गर्ग
प्रबंध सम्पादक : ओमप्रकाश
सह प्रबंध सम्पादक : श्याम सिंह
अक्षर संयोजन : कौशल रावत

**प्रबंधकीय कार्यालय**
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान)
E-mail : patheykan@gmail.com

पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक: माणकचन्द

**सहयोग राशि**
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक संपर्क करें- 79765 82011 इसके अतिरिक्त समय में वाट्सएप व मैसेज करें अथवा ईमेल पर जानकारी दें। (अति आवश्यक होने पर मो.न. 9166983789 पर मोहित जी से संपर्क कर सकते हैं)

## उच्च न्यायालय ने कहा-

# संघ जैसे राष्ट्रभक्त संगठन के कार्यों में भाग लेने पर प्रतिबन्ध लगाना असंवैधानिक

स्वाधीन भारत में लगभग 60 वर्षों तक केन्द्र में रही कांग्रेस सरकार ने केवल आपातकाल में ही संविधान पर कुठाराघात नहीं किया, अन्य कई अवसरों पर भी संवैधानिक मूल्यों के विपरीत घोर अनैतिक व अराष्ट्रीय आचरण किया है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है वर्ष 1966 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को धर्मनिरपेक्षता विरोधी एवं साम्प्रदायिक मानते हुए इसकी गतिविधियों में केन्द्रीय कर्मचारियों द्वारा भाग लेने पर प्रतिबंध लगाना।

### न्यायालय की टिप्पणियाँ एवं निर्देश

इस संबंध में मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीश द्वय न्यायमूर्ति सुश्रुत अरविंद धर्माधिकारी तथा न्यायमूर्ति गजेन्द्र सिंह की खंडपीठ ने अपने समक्ष आए एक मामले (पुरुषोत्तम गुप्ता बनाम भारत संघ व अन्य) का गत 25 जुलाई को निपटारा करते हुए जो लिखित टिप्पणियां की हैं वे तथाकथित वाम-श्यूडो सेक्युलर राष्ट्र विरोधी लॉबी तथा मुस्लिम वोटों की चाह में हिंदू विरोध को तत्पर राजनैतिक दलों के लिए किसी सदमे से कम नहीं हैं।

न्यायालय ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को एक विशुद्ध सांस्कृतिक तथा राष्ट्रभक्त संगठन बताते हुए पूर्व केन्द्र सरकारों की खिंचाई की है जिन्होंने बिना किसी तथ्य एवं आधार के संघ को साम्प्रदायिक मानकर अपने लाखों कर्मचारियों को इस संगठन से जुड़कर देश सेवा के अवसर से वंचित कर दिया।

न्यायालय ने कहा कि ऐसा कोई सर्वेक्षण अध्ययन, सामग्री या विवरण है ही नहीं जिनके आधार पर संघ जैसे संगठन को प्रतिबंधित संगठनों की सूची में डाला गया। न्यायालय ने ऐसे प्रतिबंध को संविधान के अनुच्छेद 14 तथा 19(1)(जी) का खुला उल्लंघन माना। न्यायालय ने इसे दुखद बताया कि पूर्ववर्ती केन्द्र सरकार की इस त्रुटि को ठीक करने में 5 दशक लग गए।

न्यायालय का कहना था कि यद्यपि वर्तमान केन्द्र सरकार ने इस वाद में चल रही न्यायिक कार्यवाही को देखते हुए कर्मचारियों पर सरकारी प्रतिबंध भले ही (9 जुलाई, 2024 को) वापिस ले लिया हो, परंतु हम टिप्पणी करने को बाध्य हैं ताकि भविष्य में कोई सरकार अपनी सनक और मौज के चलते राष्ट्रीय हित में कार्य करने वाले संघ जैसे किसी स्वयंसेवी संस्था को सूली पर नहीं चढ़ा सके।

न्यायालय ने अपने फैसले में उल्लेख किया है कि संघ देश में राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित एक मात्र स्वैच्छिक स्वयंसेवी संगठन है जिसके जिलों तथा तहसीलों तक सबसे ज्यादा सदस्य हैं। संघ देशहित में धार्मिक, सामाजिक, स्वास्थ्य, आपदा प्रबंधन आदि कई अराजनीतिक गतिविधियाँ संचालित करता है। संघ के स्वयंसेवक राष्ट्रीय सेवा भारती के माध्यम से स्वार्थरहित सेवा तथा आपदा-विपत्ति के समय सहायता-सहयोग करते हैं। सरस्वती शिशु मंदिरों के माध्यम से लाखों बच्चों को नाम मात्र शुल्क पर श्रेष्ठ शिक्षा उपलब्ध कराता है।

### प्रमुख लोगों ने की है संघ की सराहना

यहां उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि समाज जीवन के सभी क्षेत्रों में कार्यरत प्रमुख लोगों ने संघ कार्य की सराहना की है। भारत के पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न प्रणव मुखर्जी संघ के विजयादशमी कार्यक्रम पर स्वयं उपस्थित होकर इसकी प्रशंसा कर चुके हैं। सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश केटी थॉमस का मानना है कि संविधान, लोकतंत्र और सशस्त्र बलों के बाद आरएसएस ही वह कारक है जिसने भारत और इसके लोगों को सुरक्षित बनाया है। उन्होंने यह भी कहा कि *''देश को आपातकाल से मुक्त कराने का श्रेय एकमात्र आरएसएस को जाता है।''*

### संघ पर प्रतिबंध का नहीं था कोई असर

वस्तुत: जमीनी स्तर पर केन्द्र या राज्य सरकार के ऐसे किसी प्रतिबंध का कोई असर था ही नहीं। हजारों की संख्या में संघ के ऐसे कार्यकर्ता तथा पदाधिकारी रहे हैं जो केन्द्र या राज्य के कर्मचारी/अधिकारी की श्रेणी में आते हैं। सरकारें बदलती रहीं, परंतु इन कार्यकर्ताओं ने कभी भी सरकारी भय के कारण संघ कार्य नहीं छोड़ा। यदि इस कारण स्थानान्तरण या अन्य दमनात्मक कदम किसी सरकार ने उठाए, तो भी वे संघ कार्य निरंतर करते रहे। संघ के स्वयंसेवक तो इस मंत्र के साधक हैं-

***तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित।***
***चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूं।।***

यही कारण है कि आज जब संघ अपनी स्थापना के 100वें वर्ष में प्रवेश करने जा रहा है, हिन्दुत्व का विचार आज समाज-राष्ट्र जीवन के सभी क्षेत्रों को आलोकित कर रहा है। *-रामस्वरूप*

***स्वाधीनता दिवस की शुभकामनाएं।***

# बांग्लादेश में हिंदुओं की हत्या, मंदिर, घर-दुकानों में आग, माता-बहिनों के साथ व्यभिचार!

## आखिर क्यों हो रहा है यह?

बांग्लादेश में सत्ता पलट के साथ ही वहां के हिंदू मंदिर पर हमले कर तोड़फोड़ की गई, हिंदू घरों और दुकानों को जलाया गया, हिंदू युवतियों-महिलाओं के प्राइवेट पार्ट से कपड़ा खींचकर हवा में लहराने, उनके साथ बलात्कार करने, हिंदुओं को जान से मार देने जैसे अमानवीय व क्रूरतापूर्ण कृत्यों के समाचार निरंतर आ रहे हैं।

बांग्लादेश के निर्माण में भारत की सेना के शौर्य और बलिदान का भी हाथ रहा है। फिर भी वहां हिंदुओं का उत्पीड़न लगातार होता रहा है। एक समय वहां की जनसंख्या का 22 प्रतिशत हिस्सा रहे हिंदू-बौद्ध आज मात्र 7.8 प्रतिशत ही रह गए हैं। वे भी सुरक्षित नहीं हैं।

यक्ष प्रश्न यह है कि बांग्लादेश में आरक्षण के विरुद्ध चले छात्र आंदोलन की सभी मांग पूरा होने के बाद हिंदुओं के प्रति हिंसा और उत्पीड़न का दौर आरंभ क्यों हुआ? इस हिंदू उत्पीड़न के पीछे की मानसिकता को खोजना होगा। शायद इस प्रश्न के उत्तर में हम सब का भविष्य छिपा हुआ है।

भारत सहित दुनिया भर में इस हिंदू नरसंहार के विरुद्ध प्रदर्शन हो रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिंदू परिषद व अन्य संगठनों ने बंग्लादेश में हो रहे हिंदू, बौद्ध व अन्य अल्पसंख्यकों के नरसंहार की घोर निंदा की है तथा भारत के सभी राजनैतिक दलों से आग्रह किया है कि वे वहां प्रताड़ना के शिकार बने हिंदू, बौद्ध आदि के साथ एकजुट खड़े होवें।

## संघ ने की घोर निंदा

विगत कुछ दिनों से बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के आंदोलन के दौरान हिंदू, बौद्ध तथा वहाँ के अन्य अल्पसंख्यक समुदायों के साथ हो रही हिंसा की घटनाओं पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ गंभीर चिंता व्यक्त करता है।

बांग्लादेश में हिंदू तथा अन्य अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों की लक्षित हत्या, लूटपाट, आगज़नी, महिलाओं के साथ जघन्य अपराध तथा मंदिर जैसे श्रद्धा स्थानों पर हमले जैसी क्रूरता असहनीय है तथा रा.स्व.संघ इसकी घोर निंदा करता है।

बांग्लादेश की अंतरिम सरकार से अपेक्षा है कि वह तुरंत सख्ती से ऐसी घटनाओं पर रोक लगाये और पीड़ितों के जान, माल व मान की रक्षा हेतु समुचित व्यवस्था करे।

इस गंभीर समय में विश्व समुदाय तथा भारत के सभी राजनीतिक दलों से भी अनुरोध है कि बांग्लादेश में प्रताड़ना के शिकार बने हिंदू, बौद्ध इत्यादि समुदायों के साथ एकजुट होकर खड़े हों। बांग्लादेश की परिस्थिति में एक पड़ोसी मित्र देश के नाते सुयोग्य भूमिका निभाने का प्रयास कर रही भारत सरकार से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आग्रह करता है कि बांग्लादेश में हिंदू, बौद्ध आदि लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु हरसंभव प्रयास करे।

*- **दत्तात्रेय होसबाले**, सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (9 अगस्त 2024, दिल्ली)*

### कांग्रेसी नेताओं ने क्यों कहा-

# जो बांग्लादेश में हुआ वह भारत में भी हो सकता है

### इसके क्या हैं निहितार्थ ?

बांग्लादेश में आंदोलनकारियों द्वारा प्रधानमंत्री निवास में घुसकर तोड़फोड़ करने तथा सेना द्वारा सत्ता का तख्ता पलटने के साथ ही हिंदू, बौद्ध, ईसाइयों का उत्पीड़न व नरसंहार किए जाने की घटनाओं के बाद कांग्रेसी नेताओं के घोर आपत्तिजनक व संविधान विरोधी बयान आए हैं।

कांग्रेस के एक बड़े नेता और पूर्व केन्द्रीय मंत्री सलमान खुर्शीद ने कहा है कि बांग्लादेश में जो हो रहा है, वह यहाँ (भारत में) भी हो सकता है। भले ही, चीजें सामान्य ही क्यों ना नजर आ रही हों। वे यहां ही नहीं रुके। उन्होंने आगे कहा कि 2024 की जीत मामूली थी, शायद अभी भी बहुत कुछ करने की जरूरत है।

सलमान खुर्शीद क्या करने की जरूरत बता रहे हैं? किस ओर इशारा कर रहे हैं? क्या चुपके-चुपके कोई भारत में भी गैर संवैधानिक तरीके से तख्ता पलट की योजना बना रहा है? यदि ऐसा नहीं है तो फिर सलमान खुर्शीद ने ऐसा क्यों कहा?

क्या खुर्शीद का इशारा भारत की कट्टरपंथी जिहादी ताकतों द्वारा ऐसा कुछ करने की ओर तो नहीं हैं? क्या वे यहां भी हिंदुओं के नरसंहार किए जाने की किसी योजना की ओर इशारा कर रहे हैं? कुछ समय पहले ही मुस्लिम कट्टरपंथी प्रतिबंधित संगठन पीएफआई की 2047 तक भारत को मुस्लिम राष्ट्र बनाने की योजना संबंधी दस्तावेज पकड़े गए थे।

सलमान खुर्शीद ही नहीं, मध्य प्रदेश कांग्रेस के नेता सज्जन वर्मा का धमकी

देने के अंदाज में एक वीडियो सामने आया है जिसमें वे अपने समर्थकों की भीड़ में कहते दिखाई दे रहे हैं कि एक दिन भारत के प्रधानमंत्री आवास पर भी लोग धावा बोल देंगे जैसा कि बांग्लादेश में हुआ। उन्होंने आगे कहा, '' पहले श्रीलंका, फिर बांग्लादेश में ऐसा हुआ, अब भारत की बारी है।''

तो क्या संविधान हाथ में लहराते हुए भाजपा या मोदी पर संविधान तोड़ने का आरोप लगाने वाली कांग्रेस गैर संवैधानिक तरीके से सत्ता प्राप्ति के सपने देखने लगी है?

जिस पुस्तक के लोकार्पण कार्यक्रम में सलमान खुर्शीद ने जहर उगला था, वहां असदुद्दीन ओवैसी भी थे।

ओवैसी ने प्रश्न उठाया कि यदि भाजपा की जगह विपक्ष (गैर भाजपा पार्टियाँ)सत्ता में होती तो क्या चीजें(मुसलमानों की दशा)बदल जातीं? उन्होंने स्वयं ही उत्तर दिया – 'नहीं'।

ओवैसी ने इसको स्पष्ट करते हुए कहा कि जर्मनी में यहूदी विरोधी भावनाओं की तरह ही भारत में मुस्लिम विरोधी भावना भूमिगत रूप से (सब में) मौजूद है। यानी मुस्लिम नेतृत्व भाजपा सहित सभी दलों को मुस्लिम विरोधी ही मानता है। स्पष्ट है कि उनका वोट लोकतंत्र या किसी पंथ निरपेक्ष (सेक्युलर) शासन के लिए नहीं होता। उनका उद्देश्य उन्हें बहुत स्पष्ट है, जैसा कि बाबा साहेब अंबेडकर ने विभाजन संबंधी अपनी पुस्तक में लिखा है, देश को दारुल-इस्लाम यानी ऐसा देश बनाना जहां शासन शरियत के अनुसार चलता है।

क्या सलमान खुर्शीद व सज्जन वर्मा जैसे कांग्रेसी नेताओं के बयानों से ऐसा आभास नहीं होता कि बांग्लादेश में हिंदू मंदिर तोड़ने, हिंदुओं को मारने, सत्ता पक्ष के नेताओं को मारने पर कांग्रेस के लोग तालियां बजा रहे हैं। उन्हें किस बात की खुशी हो रही है?

बांग्लादेश के एक पत्रकार ने राहुल गांधी पर आरोप लगाया है कि उन्होंने पिछले महिने लंदन में बांग्लादेश के विपक्षी दल की नेता खालिदा जिया के बेटे से मुलाकात की थी और बांग्लादेश में चल रहे आंदोलन पर अपनी सहमति-स्वीकृति दी थी। यदि ऐसा हुआ है तो यह गंभीर मामला है और बांग्लादेश में हुए तख्ता पलट के लिए अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र की ओर भी इशारा करता है। (राम)



# क्या हम एक और विभाजन की दिशा में बढ़ रहे हैं?

## महात्मा गांधी की इच्छा थी पाकिस्तान में बसने की

■ प्रशांत पोल

हिन्दुस्तान
Hindustan
कांग्रेस द्वारा भारत विभाजन-योजना स्वीकृत

आज से ठीक 77 वर्ष पूर्व आयी, 14 अगस्त की वह रात, काली रात थी। किसी समय अत्यंत शक्तिशाली, वैभवशाली और संपन्न रहे हमारे अखंड भारत के तीन टुकड़े हो गए थे। पवित्र सिंधु नदी परायी हो गई। राजा दाहिर के पराक्रम की गाथा सुनाने वाला सिंध प्रांत हमसे छिन गया। हजारों वर्षों से वहां खेती / किसानी / व्यापार करने वाले हमारे लाखों सिंधी भाई-बहन, एक ही रात में विस्थापित हो गए। हरा-भरा, फला-फूला पंजाब भी आधा गया। गुरु नानक देव जी का जन्मस्थान, पवित्र ननकाना साहिब गुरुद्वारा भी गया। गुरुद्वारा पंजासाहिब भी गया। महाराजा रणजीत सिंह के पराक्रम की निशानियां जाती रहीं। देवी की शक्तिपीठों में से एक, पवित्र हिंगलाज देवी का मंदिर भी हमें पराया हो गया। पवित्र दुर्गा कुंड से सुशोभित, पूर्व का वेनिस कहलाने वाला, बंगाल का 'बरिशाल' हमसे छिन गया। ढाका की मां ढाकेश्वरी भी परायी हुईं।

### भारत बना रहा 'हिंदू-मुस्लिम राष्ट्र'

12 से 15 लाख लोगों की हत्या और डेढ़ करोड़ लोगों का विस्थापन करने वाला ''भारत का विभाजन'' क्यों हुआ..? इस विभाजन का एकमात्र कारण था, अलग राष्ट्र का मुसलमानों का दुराग्रह और इस मांग को मनवाने के लिए किया गया 'डायरेक्ट एक्शन डे' जैसा जघन्य हत्याकांड..!

1947 का विभाजन, सीधे-सीधे मजहबी आधार पर था। मुसलमानों के लिए पाकिस्तान बना और वहां सारे मुसलमान जाएंगे ऐसा कहा गया। डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर ने जनसंख्या के अदला-बदली की पुरजोर मांग रखी। किंतु गांधी जी और नेहरू के आग्रह के कारण, भारत के मुसलमानों को यहीं रहने दिया गया। पाकिस्तान में ऐसा हुआ नहीं। वहां ऐसा वातावरण बनाया गया कि सारे हिंदू वहां से पलायन करते गए। आज पाकिस्तान में बमुश्किल 1.97 प्रतिशत हिंदू बचे हैं, जो नरक से भी बदतर जीवन जी रहे हैं। यही हाल बांग्लादेश के हिंदुओं का है, जो मात्र 7.9 प्रतिशत बचे हैं।

संक्षेप में पाकिस्तान (और बाद में टूट कर बना बांग्लादेश) तो मुस्लिम राष्ट्र बन गया, किंतु भारत हिंदू-मुस्लिम राष्ट्र बना रहा। धीरे-धीरे भारत में मुस्लिम जनसंख्या बढ़ती गई और उनका प्रतिशत भी बढ़ता गया।

### स्वाधीनता के बाद भी मुसलमान 'मुस्लिम लीग' के रास्ते पर

अगर यह मुस्लिम जनसंख्या भारत की मुख्य धारा के साथ घुल-मिल जाती, भारत के पुरखों में अपने पुरखे ढूंढती, भारत की परंपराओं का सम्मान करती तो कोई प्रश्न नहीं खड़ा होता। इंडोनेशिया इसका जीता जागता प्रमाण है। विश्व की सबसे ज्यादा मुस्लिम जनसंख्या इंडोनेशिया में है। किंतु वहां का मुस्लिम, उस राष्ट्र की मुख्य धारा को अपना मानता है। वहां के पुरखों को, वहां की

परंपराओं को अपना मानता है। उन पर गर्व करता है। इसलिए वहां के विद्यालय / विश्वविद्यालय के बाहर देवी सरस्वती की भव्य प्रतिमाएं होती हैं। उनकी मुद्रा (नोटों) पर भगवान गणेश का चित्र रहता है। उनकी भाषा में 70 प्रतिशत संस्कृत शब्द रहते हैं।

दुर्भाग्य से भारत के मुसलमानों ने ऐसा नहीं किया। वह उन्हीं रास्तों पर चल रहे थे, जिन पर स्वतंत्रता से पहले मुस्लिम लीग चली थी। इसीलिए विभाजन के 77 वर्षों के बाद, आज जो स्वर सामने आ रहे हैं, वे अत्यंत चिंताजनक हैं। स्वतंत्रता पूर्व वाली स्थिति में हम पहुंच रहे हैं क्या, ऐसा सोचने के लिए पर्याप्त प्रमाण मिल रहे हैं।

## मुसलमानों द्वारा रणनीतिक मतदान

अभी 2024 के चुनाव में जो चित्र सामने आया है, वह इस बात को और स्पष्ट करता है। इस चुनाव में मुसलमानों ने रणनीतिक (strategic) मतदान किया है। उनके मुल्ला-मौलवियों के अत्यंत स्पष्ट निर्देश थे कि भारतीय जनता पार्टी को जो हरा सकता है, उसी प्रत्याशी को वोट देना है। अर्थात् अगर कोई मुस्लिम प्रत्याशी भी मैदान में है, और वह भाजपा को हराने की क्षमता नहीं रखता है, तो उसे वोट नहीं देना है।

## महाराष्ट्र के 'धुले' लोकसभा क्षेत्र का उदाहरण

इस बार कांग्रेस के नेतृत्व वाली इंडी एलायंस के प्रत्याशियों को मुसलमानों ने जबर्दस्त समर्थन दिया। इसलिए धुले लोकसभा में, छह में से पांच विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी 1 लाख 90 हजार मतों से आगे थे। किंतु मुस्लिम बहुल मालेगांव (मध्य) इस एक विधानसभा क्षेत्र ने कांग्रेस के प्रत्याशी को 1 लाख 93 हजार की लीड दी और भाजपा 3 हजार मतों से परास्त हुई। यहां पर डॉ. प्रकाश आंबेडकर के 'वंचित बहुजन समाज आघाडी' के जहूर अहमद मोहम्मद भी चुनाव मैदान में थे। किंतु उन्हें मुस्लिम वोटर्स ने सिरे से नकार दिया। उन्हें 5 हजार वोट भी नहीं मिले। रणनीति के अंतर्गत, मुसलमानों ने अपने सारे वोट, कांग्रेस प्रत्याशी डॉ. शोभा बच्छाव को दिए और उनकी जीत सुनिश्चित की।

ऐसा देशभर की अधिकांश लोकसभा सीटों पर हुआ। स्वाभाविक था, कांग्रेस इससे फूली नहीं समा रही है। कांग्रेस के नेता, मुसलमानों के लिए 'कुछ भी' करने के लिए तैयार हैं। और यहीं पर कांग्रेस भारी भूल कर रही है।

## स्वाधीनता पूर्व कांग्रेस का मुस्लिम तुष्टिकरण और मुस्लिम रूख

यही हुआ था स्वतंत्रता के पहले, तीस के दशक में, जब मुस्लिम तुष्टिकरण करने के कारण कांग्रेस को, और विशेषत: महात्मा गांधी को, यह लगता था कि सारे मुस्लिम कांग्रेस के साथ हैं, मुस्लिम लीग के साथ नहीं। प्रारंभ में मुस्लिम लीग ने भी यही गलतफहमी बनाए रखी। किंतु सही चित्र सामने आया, सन 1945 के चुनाव में। इस बार, कांग्रेस ने मुस्लिम लीग को काट देने के लिए, मौलाना अबुल कलाम आजाद को कांग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया। उनकी अध्यक्षता में लड़े गए, मुस्लिम तुष्टिकरण से भरपूर, इस चुनाव में कांग्रेस को मुसलमानों से बहुत ज्यादा अपेक्षाएं थीं। किंतु कांग्रेस का दुर्भाग्य, मुसलमानों के लिए आरक्षित 30 में से एक भी सीट कांग्रेस को नहीं मिली। पूरे देश में मुसलमानों ने कांग्रेस को सिरे से नकार दिया और मुस्लिम लीग का ही पुरजोर समर्थन किया।

## गांधी जी की पाकिस्तान में रहने की थी इच्छा

महात्मा गांधी की तो यह प्रबल इच्छा थी कि स्वतंत्रता के पश्चात पाकिस्तान में रहने के लिए जाएं। (8 अगस्त, 1947 के मुंबई के Times of India के समाचार का शीर्षक था – Mr. Gandhi to spend rest of his days in Pakistan। उनको लगता था कि वह पाकिस्तान के मुसलमानों का मत परिवर्तन कर सकते हैं। किंतु दुर्भाग्य से, पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिन्ना, प्रधानमंत्री लियाकत अली खान या बाकी बड़े राष्ट्रीय नेता तो दूर की बात, पाकिस्तान के किसी गली के, किसी छुटभैय्ये नेता ने भी, गांधी को पाकिस्तान में आमंत्रित नहीं किया। अर्थात् मुसलमानों ने कांग्रेस को 'यूज एंड थ्रो' पद्धति से अपनाया था।

## हारना अधीर रंजन चौधरी का

इस 2024 के चुनाव में भी मुसलमानों ने इसकी झलक, कांग्रेस को दिखाई। लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी, पश्चिम बंगाल के बहरामपुर से 1999 से चुनाव जीतते आए हैं। यह मुस्लिम बहुल क्षेत्र है। अर्थात् यहां 52 प्रतिशत मुस्लिम वोटर हैं। अधीर रंजन चौधरी ने पिछले 20-22 वर्षों में मुसलमानों के लिए, इस क्षेत्र में जो-जो बन सका, वह सब कुछ किया है। किंतु इस बार रणनीति के अंतर्गत, मुसलमानों ने, तृणमूल कांग्रेस के माध्यम से गुजरात के यूसुफ पठान को यहां से चुनाव लड़वाया। 'मां-माटी-मानुष' का नारा देने वाली तृणमूल कांग्रेस ने एक ऐसे प्रत्याशी को खड़ा किया, जिसे बंगाली का 'ब' भी नहीं आता था। किंतु मुस्लिम समुदाय की रणनीति एकदम स्पष्ट थी। कोई संभ्रम नहीं। कोई कंफ्यूजन नहीं। किंतु-परंतु भी नहीं। उन्हें इस बार बहरामपुर से मुस्लिम प्रत्याशी चुनकर लाना था, वह लाया। वह भी इतने वर्ष मुसलमानों की तरफदारी करते हुए, उनका तुष्टीकरण करते हुए राजनीति करने वाले अधीर रंजन चौधरी को हराकर..!

## क्या इतिहास दोहरायेंगे?

इन सब का अर्थ स्पष्ट हैं। हम शायद इतिहास को दोहराने वाले हैं। जो इस देश में 1930-1940 के दशकों में हुआ, वही अगले 5-10 वर्षों में दोहराने की बात हो रही है। हलाल सर्टिफिकेट का आग्रह, सार्वजनिक स्थानों पर अलग प्रार्थना स्थल का आग्रह, सड़क पर नमाज का आग्रह, हिजाब का आग्रह करते-करते, अलग 'मुगलिस्तान' तक, बात जाएगी यह दिख रहा है। इस 14 अगस्त को, जब देश 'विभाजन विभीषिका दिवस' मना रहा था, तब यह प्रश्न हम सब के मन में कौंध रहा होगा, कि क्या हम एक और विभाजन की दिशा में बढ़ रहे हैं..?

*(जाने-माने लेखक हैं)*

# जिहादियों के प्रति न्यायालयों के रुख पर लगते प्रश्न चिह्न!

अजमेर की अतिरिक्त जिला न्यायाधीश रितू मीणा ने अजमेर दरगाह के खादिम गौहर चिश्ती सहित 6 लोगों को दरगाह के बाहर सिर तन से जुदा के नारे लगाने वाले मामले में पर्याप्त सबूतों के अभाव में बरी कर दिया।

## क्या तकनीकी खामियों के कारण किया रिहा?

एक आरोपी अहसानुल्लाह आज तक फरार है। इसने गौहर चिश्ती को हैदराबाद में अपने पास शरण दी थी। वैसे देखा जाए तो नारे लगाने पर केस दर्ज होने के बाद गौहर चिश्ती का फरार होना भी गुनाह का एक सबूत था। लेकिन न्यायाधीश रितु मीणा ने इस पर ध्यान क्यों नहीं दिया, यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है? न्यायाधीश ने कहा कि कथित वीडियो जिसमें नारे लगाए गए, उसका सत्यापन अदालत में नहीं हुआ। न्यायाधीश ने कहा पुलिस ने मौके का नक्शा नहीं बनाया और जो पुलिस वाले मौके पर उपस्थित थे, वे अपनी उपस्थिति के दस्तावेज प्रस्तुत नहीं कर सके। यानी वीडियो में आरोपी सर तन से जुदा के नारे लगाते हुए दिख रहे हैं, परंतु तकनीकी आधार पर अरोपियों को दोषमुक्त कर दिया गया। बताया गया कि जिस मोबाइल से वीडियो बनाया गया वह न्यायालय में पेश नहीं किया गया।

क्रिमिनल केस में हर कोई जानता है कि सबूतों की व्याख्या हर किसी व्यक्ति के विवेक पर निर्भर करती है, एक व्यक्ति की दृष्टि में सबूत और गवाह का बयान सही होता है तो दूसरे की दृष्टि में गलत। विवेचना का भी अपना अपना दृष्टिकोण होता है। प्रभावशाली आरोपियों के मामले में लालच और डर भी एक पहलू होते हैं। न्यायाधीश भी आरोपियों के ही शहर अजमेर की रहने वाली हैं। निर्णय देते समय उनकी मानसिकता क्या थी, यह तो वे ही जानती हैं।

## बिना सबूतों के न्यायाधीशों ने नूपुर शर्मा को दोषी ठहरा दिया था

वैसे यह कोई पहला या आखिरी मामला नहीं है। सबूत के अभाव में 100 करोड़ हिन्दुओं के कत्ल की धमकी देने वाले अकबरुद्दीन ओवैसी को भी बरी कर दिया गया था। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायाधीश पारदीवाला ने नूपुर शर्मा के विरुद्ध जिस तरह से बोला था, उसे सुनकर देश के हर व्यक्ति को लगा था कि उनके पास नूपुर शर्मा के विरुद्ध कन्हैयालाल की हत्या के लिए जिम्मेदार होने के पुख्ता सबूत हैं। दोनों न्यायाधीशों ने कहा था, "she had a loose tongue and that set the entire country on fire." (उसकी बकवास ने पूरे देश में आग लगा दी है) उन्होंने यह भी कहा, "this lady is single-handedly responsible for what is happening in the country." (देश में जो भी हो रहा है, उसके लिए यह महिला एकमात्र जिम्मेदार है) उन्होंने टिप्पणी की, "She has a threat or she has become a security threat? The way she has ignited

emotions across the country." (जिस तरह से उसने पूरे देश की भावनाओं को भड़काया है, वह सुरक्षा के लिए खतरा बन गई है)। उन्होंने नूपुर को कन्हैया की हत्या के लिए सीधे जिम्मेदार ठहरा दिया और यहाँ तक कहा कि नूपुर शर्मा पूरे देश से माफी मांगें। नूपुर शर्मा ने तो वही कहा जो मजहबी पुस्तक में लिखा है। दूसरी ओर वास्तव में हेट स्पीच द्वारा हत्या के लिए उकसाने वालों को कोर्ट ने छोड़ दिया। नूपुर शर्मा मामले में भी 15 रिटायर्ड न्यायाधीशों, 77 रिटायर्ड वरिष्ठ नौकरशाहों और आर्मी के 25 रिटायर्ड अधिकारियों ने तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश को पत्र लिख कर दोनों न्यायाधीशों के बयानों की घोर निंदा कर उनसे अपने बयान वापस लेने को कहा था, लेकिन वे टस से मस नहीं हुए।

## कमलेश तिवारी का गला काटने का मामला

इसी प्रकार लोगों को तब भी आश्चर्य हुआ, जब सुप्रीम कोर्ट के दो जजों अभय ओक और अगस्टिन जॉर्ज मसीह ने कमलेश तिवारी की कलमा पढ़कर इस्लामिक रीति से गला काटे जाने की योजना बनाने वाले तथा हत्यारों को हथियार उपलब्ध करवाने वाले मुख्य आरोपी व षड्यंत्रकारी सैयद कासिम अली को जमानत पर रिहा कर दिया था।

सैयद कासिम अली ने न केवल हत्या करने की पूरी योजना बनायी बल्कि एक मुस्लिम व्हाट्स एप ग्रुप में सूरत के दो युवकों को इस काम के लिए तैयार भी किया। उन्हें लखनऊ बुलाया और आगे का षड्यंत्र रचा। कोर्ट ने इतने बड़े क्रिमिनल अपराधी को जमानत दे दी। सुप्रीम कोर्ट का कहना था, वह साढ़े चार वर्षों से जेल में है। उसका कोई पुराना आपराधिक रिकार्ड नहीं है। जबकि, लखनऊ की निचली अदालत और इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने सारे सबूत देखकर कहा था कि यह बहुत जघन्य हत्याकांड है और सैयद कासिम अली बहुत खूंखार अपराधी है। ऐसे दरिंदे को जमानत पर रिहा करना उचित नहीं है।

कभी-कभी इन उदाहरणों से यह आशंका उत्पन्न होती है कि शीर्ष न्यायालय में बैठे कुछ जज कहीं किसी टूल किट का हिस्सा तो नहीं? वे हिन्दू हितों पर जैसे कुठाराघात करते हैं, उससे इस सोच को और बल मिलता है। ■

*(29 जुलाई, 2024 को पाथेय कण पोर्टल पर प्रकाशित लेख से उद्धृत)*

# क्या तीर्थयात्रियों को धार्मिक सात्विक खाना खाने का अधिकार नहीं है? - विहिप

## हिंदू समाज के समक्ष क्या है चुनौतियां ? होंगी चर्चाएं एवं संगोष्ठियां

विश्व हिंदू परिषद की ओर से प्रश्न उठाया गया है क्या तीर्थ यात्री को यात्रा में अपने धर्म के अनुसार धार्मिक सात्विक खाना खाने का अधिकार भी नहीं है? गत 28 जुलाई को जोधपुर में विहिप के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आलोक कुमार ने प्रेस वार्ता में कहा कि लोकतंत्र में दो आदेश नहीं हो सकते। किसी एक धर्म के मानने वालों के लिए अलग और हिंदू धर्म को मानने वालों के लिए अलग।

गत 27-28 जुलाई को जोधपुर में विहिप की केन्द्रीय प्रबंध समिति की दो दिवसीय बैठक सम्पन्न हुई। इसमें भारत के 47 प्रांतों सहित विश्वभर के 300 पदाधिकारियों ने भाग लिया।

श्री आलोक कुमार ने कहा कि हिंदू धर्म वाले तीर्थ स्थलों और धार्मिक यात्राओं के मार्ग में बहुत सारे मुसलमान दुकानदार अपनी दुकान का नाम हिंदू देवी-देवताओं के नाम पर रखते हैं। कई जगह पर तो हिंदू देवी-देवताओं के चित्र भी लगाते हैं। यह सीधे-सीधे अपना मजहब छिपा कर धोखा देने की बात है। कोई इस प्रकार के धोखे को अपना कानूनी अधिकार कैसे बता सकता है?

### पाक विस्थापितों को नागरिकता देने में सहयोग

विहिप एवं बजरंग दल के कार्यकर्ता सब स्थानों पर पाकिस्तान से आए पीड़ित विस्थापित हिंदुओं को भारत की नागरिकता दिलाने में सहयोग कर रहे हैं।

### अर्चक पुरोहितों का प्रशिक्षण

धार्मिक रीति-रिवाज से पूजा, अर्चना और पुरोहित कार्य सम्पन्न हों, इस हेतु देशभर में 'अर्चक-पुरोहित प्रशिक्षण' की योजना बनाई गई है। भारत सहित विश्व के हिंदू मंदिरों में ऐसे पुजारियों की मांग बढ़ी है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में समाज के हर वर्ग के जाति, मत, पंथ, संप्रदाय को सहभागी बनाया जाएगा।

### स्थापना के 60 वर्ष हो रहे हैं पूरे

श्री आलोक कुमार ने बताया कि आने वाली जन्माष्टमी (26 अगस्त, 2024) पर विश्व हिंदू परिषद की स्थापना के 60 वर्ष पूरे हो जाएंगे। इस अवसर पर देश भर में चर्चाएं एवं संगोष्ठियां होंगी, जिनका विषय रहेगा- 'हिंदू समाज के समक्ष चुनौतियां और उनका निवारण' हिंदू समाज के मंदिरों को समाज जागरण, धर्म प्रचार एवं समरसता का केन्द्र बनाने का संकल्प भी विश्व हिंदू परिषद द्वारा लिया गया है।

## असम का 'मोइदम' अब विश्व धरोहर

गत 26 जुलाई को असम के चराइदेव स्थित अहोम साम्राज्य के 'मोइदम' को विश्व धरोहर की सूची में शामिल कर लिया गया। यह संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा सूचीबद्ध भारत का 43वां, तो देश में पूर्वोत्तर का प्रथम 'विश्व सांस्कृतिक धरोहर स्थल' है।

यह घोषणा विश्व मंच पर भारत की विरासत को मान्यता दिलाने के केन्द्र सरकार के निरंतर प्रयास का परिणाम है। अहोम 'मोइदम' का यूनेस्को की 'विश्व धरोहर सूची' में शामिल होना अतुलनीय है। ये पिरामिड सरीखी अनूठी टीलेनुमा संरचनाएं हैं, जिनका प्रयोग छह सदियों तक ताई-अहोम वंश द्वारा अपने राजवंश के सदस्यों को उनकी प्रिय वस्तुओं के साथ दफनाने के लिए किया जाता था। 'मोइदम' गुंबददार कक्ष (चौ-चाली) होते हैं, जो दो मंजिला होते हैं, जिनमें प्रवेश के लिए मेहराबदार मार्ग होता है और अर्धगोलाकार मिट्टी के टीलों के ऊपर ईंटों और मिट्टी की परतें बिछाई जाती हैं। 'मोइदम' दफन पद्धति अभी भी कुछ पुजारी समूहों और चाओ-डांग कबीले (शाही अंगरक्षक) द्वारा प्रचलित है।

# जन मन शिल्पी यादवराव जोशी

दक्षिण भारत में संघ कार्य का विस्तार करने वाले यादव कृष्ण जोशी जी का जन्म अनंत चतुर्दशी (3 सितम्बर, 1914) को नागपुर के एक वेदपाठी परिवार में हुआ था। वे अपने माता-पिता के एकमात्र पुत्र थे। उनके पिता कृष्ण गोविन्द जोशी जी एक साधारण पुजारी थे। अत: यादवराव जी को बालपन से ही संघर्ष एवं अभावों भरा जीवन बिताने की आदत हो गयी।

यादवराव जी का डॉ. हेडगेवार जी से बहुत निकट सम्बन्ध था। वे डॉक्टर जी के घर पर ही रहते थे। एक बार डॉक्टर जी बहुत उदास मन से मोहिते के बाड़े की शाखा पर आये। उन्होंने सबको एकत्र कर कहा कि ब्रिटिश शासन ने वीर सावरकर की नजरबन्दी दो वर्ष के लिए बढ़ा दी है। अत: सब लोग तुरन्त प्रार्थना कर शांत रहते हुए घर जाएंगे। इस घटना का यादवराव जी के मन पर बहुत प्रभाव पड़ा। वे पूरी तरह डॉक्टर जी के भक्त बन गये।

यादवराव जी एक श्रेष्ठ शास्त्रीय गायक थे। उन्हें संगीत का 'बाल भास्कर' कहा जाता था। उनके संगीत गुरू शंकरराव प्रवर्तक उन्हें प्यार से बुटली भट्ट (छोटू पंडित) कहते थे। डॉ. हेडगेवार जी की उनसे पहली भेंट 20 जनवरी, 1927 को एक संगीत कार्यक्रम में ही हुई थी।

वहां आये संगीत सम्राट सवाई गंधर्व ने उनके गायन की बहुत प्रशंसा की थी, परंतु यादवराव ने संघ कार्य को ही जीवन का संगीत बना लिया। सवाई गंधर्व हिंदुस्तानी संगीत के श्रेष्ठ गायक और भारत रत्न से सम्मानित पंडित भीमसेन जोशी के भी गुरु थे। उन्होंने बालक यादवराव में संगीत प्रतिभा देखी थी और अपने साथ तब आग्रह कर एक छायाचित्र (फोटो) खिंचवाया था। वे अपने शिष्यों से यादवराव की संगीत प्रतिभा की कई बार चर्चा करते थे। इस कारण पं.भीमसेन की यादवराव जी के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा थी। वर्ष 1979 में यादवराव जी से अपने घर पर पहली बार भेंट होने पर वे यादवराव जी के सामने खड़े ही रहे। यादवराव जी द्वारा बैठने के लिए बार-बार आग्रह करने पर जोशी जी उनके चरणों के पास फर्श पर नीचे ही बैठ गए।

वर्ष 1940 से संघ में संस्कृत प्रार्थना का चलन हुआ। इसका पहला गायन संघ शिक्षा वर्ग में यादवराव जी ने ही किया था। संघ के अनेक गीतों के स्वर भी उन्होंने बनाये थे।

एमए तथा कानून की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद यादवराव जी को प्रचारक के नाते झांसी भेजा गया। वहां वे तीन-चार माह ही रहे थे कि डॉक्टर जी का स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया। अत: उन्हें डॉक्टर जी की देखभाल के लिए नागपुर बुला लिया गया।

वर्ष 1941 में उन्हें कर्नाटक प्रांत प्रचारक बनाया गया। इसके बाद वे दक्षिण क्षेत्र प्रचारक, अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख, प्रचार प्रमुख, सेवा प्रमुख तथा वर्ष 1977 से 84 तक सह सरकार्यवाह रहे। दक्षिण में पुस्तक प्रकाशन, सेवा, संस्कृत प्रचार आदि के पीछे उनकी प्रेरणा थी। 'राष्ट्रोत्थान साहित्य परिषद' द्वारा 'भारत-भारती' पुस्तक माला के अन्तर्गत बच्चों के लिए लगभग 500 छोटी पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। यह बहुत लोकप्रिय प्रकल्प है।

छोटे कद वाले यादवराव जी का जीवन बहुत सादगीपूर्ण था। वे प्रात:कालीन अल्पाहार नहीं करते थे। भोजन में भी एक दाल या सब्जी ही लेते थे। कमीज और धोती उनका प्रिय वेष था। उनके भाषण मन-मस्तिष्क को झकझोर देते थे। एक राजनेता ने उनकी तुलना सेना के जनरल से की थी।

उनके नेतृत्व में कर्नाटक में कई बड़े कार्यक्रम हुए। वर्ष 1948 तथा वर्ष 1962 में बंगलौर में क्रमश: आठ तथा दस हजार गणवेशधारी तरुणों का शिविर, वर्ष 1972 में विशाल घोष शिविर, वर्ष 1982 में बंगलौर में 23 हजार संख्या का हिन्दू सम्मेलन, वर्ष 1969 में उडुपी में विहिप का प्रथम प्रांतीय सम्मेलन, वर्ष 1983 में धर्मस्थान में विहिप का द्वितीय प्रांतीय सम्मेलन, जिसमें 70 हजार प्रतिनिधि तथा एक लाख पर्यवेक्षक शामिल हुए। विवेकानंद केन्द्र की स्थापना तथा मीनाक्षीपुरम् कांड के बाद हुए जनजागरण में उनका योगदान उल्लेखनीय है।

1987-88 में वे विदेश प्रवास पर गये। केन्या के एक समारोह में वहां के मेयर ने जब उन्हें आदरणीय अतिथि कहा, तो यादवराव बोले, मैं अतिथि नहीं आपका भाई हूं। उनका मत था कि भारतवासी जहां भी रहें, वहां की उन्नति में योगदान देना चाहिए, क्योंकि हिन्दू पूरे विश्व को एक परिवार मानते हैं। जीवन के संध्याकाल में वे अस्थि कैंसर से पीड़ित हो गये। 20 अगस्त, 1992 को बंगलौर (अब बेंगलुरु) संघ कार्यालय में उन्होंने अपनी जीवन यात्रा पूर्ण की। ■

*(विजय कुमार लिखित पुस्तक 'जीवन दीप जले' तथा चन्द्रशेखर भंडारी की पुस्तक 'जन मन शिल्पी' से साभार)*

**तरुणाई शरीर की स्थिति नहीं मानसिक अवस्था है, मनुष्य अपने विश्वास से युवा और संशय से वृद्ध होता है। वह अपने आत्मविश्वास से तरुणाई और अपने भय से वृद्धावस्था की ओर जाता है।**

**– यादवराव जोशी**

*केरल के वायनाड में प्राकृतिक आपदा, बचाव कार्य में जुटे स्वयंसेवक*

# सेवा कार्य करते हुए बलिदान हुए संघ के दो स्वयंसेवक

आपदा में बचाव व राहत कार्य चलाना तथा प्रशासन का सहयोग करना संघ के स्वयंसेवकों का स्वभाव है। यही कारण है कि देश में जब भी कहीं आपदा आती है तो संघ के कार्यकर्ता अग्रिम पंक्ति में खड़े नजर आते हैं। ताजा मामला केरल के वायनाड जिले का है। 30 जुलाई को केरल के पहाड़ी क्षेत्र वायनाड में हुई भारी बारिश के बीच बड़े स्तर पर हुए भूस्खलन से इस तबाही में मुंडक्कई और चूरलमाला गांवों का नामोनिशान तक मिटा दिया।

वायनाड के अट्टामाला में भूस्खलन के बाद बचाव कार्य करते समय संघ के दो स्वयंसेवक सरथ और प्रजीश जब बचाव कार्य में संलग्न थे कि एक और भूस्खलन हुआ, जिसने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया और कइयों की जान बचा चुके दोनों कार्यकर्ता सेवा कार्य करते हुए संसार से विदा हो गए।

*सरथ व प्रजीश*

उत्तर केरल प्रांत के संघचालक श्री केके बलराम ने बताया कि पीड़ितों की सहायता के लिए लगभग एक हजार स्वयंसेवक राहत कार्य में लगे। तमिलनाडु के नीलगिरी जिले और अन्य स्थानों से आए स्वयंसेवक भी राहत कार्यों में शामिल हुए हैं। कार्यकर्ताओं ने पीड़ितों के लिए भोजन की व्यवस्था की, जहां-तहां फंसे लोगों को बाहर निकाला, कपड़ों तथा प्रभावित क्षेत्रों में कीटाणुनाशक पाउडर का छिड़काव किया। साथ ही इस दुर्भाग्यपूर्ण त्रासदी में मृत हुए लोगों का अंतिम संस्कार भी किया।

कार्यकर्ताओं के बलिदान को याद करते हुए बीती 4 अगस्त को धनबाद (झारखण्ड) के कोयला नगर व कुसुम विहार क्षेत्र में पौधारोपण किया गया। रोपित किए गए 40 पौधों में से आम के दो पौधों के नाम प्रजीश और सरथ रखते हुए स्वयंसेवकों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी।

केरल की 2018 व 2019 की बाढ़ के दौरान भी स्वयंसेवकों ने अद्वितीय राहत गतिविधियां चलाई थीं, जिसके लिए उनकी सर्वत्र प्रशंसा हुई थी। अभी भी केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने स्वयंसेवकों के सेवाकार्य की प्रशंसा की है।

*समाज समरस है, परंतु नेता अपने वोट के लिए हिंदू समाज में विभाजन पैदा करते हैं*

# ठाकुर परिवार ने मेघवाल समाज द्वारा संचालित मंदिर के लिए भूमि दान की

बाड़मेर जिले के गांव मवड़ी में ठाकुर गणपत सिंह ने मेघवाल समाज द्वारा संचालित बाबा रामदेव मंदिर के लिए भूमि दान में दी थी। अब उनके पुत्र मेघसिंह और समुद्रसिंह ने जमीन की रजिस्ट्री मंदिर के संचालक मेघवाल समाज के नाम कराई। उन्होंने कहा कि हमने अपना पुत्र धर्म निभाया। पिता के मार्ग पर चलना गर्व की बात है। जमीन का वर्तमान बाजार मूल्य लगभग 30 लाख रुपए बताया जा रहा है।

मेघवाल समाज के गणेशाराम, भजाराम आदि वरिष्ठजन बताते हैं कि ठाकुर स्व.गणपत सिंह, बाबा रामदेव के अनन्य भक्त थे। उनका मेघवाल समाज के प्रति हमेशा स्नेह रहा। वे पूरे हिंदू समाज को साथ लेकर चलने में विश्वास करते थे।

इस मामले में मेघवाल समाज के युवा अंकित मेघवाल ने कहा कि समाज तो समरस ही है, नेता अपने वोट के लिए हिंदू समाज में विभाजन पैदा करते आए हैं। नेता और मीडिया न हो, तो सब ठीक है। दुर्भाग्य से मीडिया नकारात्मक

समाचार अधिक दिखाता है, इससे लगता है सब जगह बस यही हो रहा है। सकारात्मक खबरें दबी रह जाती हैं। और नेताओं को देखिए, नेता प्रतिपक्ष जातीय जनगणना कराने पर अड़े हैं। वह हिंदुओं को बांटने का प्रयास कर रहे हैं और आम हिंदू जन जात-पांत से परे सामाजिक समरसता और सौहार्द्र के उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

## सीमा क्षेत्र में पाथेय कण पाठक सम्मेलन

# राष्ट्र हित और सत्यनिष्ठा के लिए प्रतिबद्ध है पाथेय

जैसलमेर जिले के फतेहगढ़ उपखण्ड के पाथेय कण पाठकों का वार्षिक सम्मेलन गत 4 अगस्त को सम्पन्न हुआ।

फतेहगढ़ में 85 गांवों के 410 घरों में पाथेय जाता हैं। कार्यक्रम में सीमा क्षेत्र के लगभग 70 गांवों के 320 महिला-पुरुष पाठक उपस्थित हुए। प्रतिकूल मौसम और भारी बरसात के बावजूद इन पाठकों के उत्साह में कोई कमी नहीं आयी।

वरिष्ठ कवि अम्बादान चारण की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थीं डॉ. मधु गाडी (पीएचसी देवीकोट)। मुख्य वक्ता के रूप में पाथेय कण के सह प्रबंध संपादक श्री श्याम सिंह ने कहा कि टीवी में ऐसा कोई कार्यक्रम नहीं आता जिसे पूरा परिवार साथ बैठकर देख सकें। संस्कार निर्माण की दृष्टि से आज मीडिया जगत इतना जिम्मेदार नहीं है। ऐसे में समाज को स्वयं चिंता करनी पड़ेगी। मोबाइल के इस युग में सामग्री कौन निर्माण कर रहा है, कंटेंट कौन बना रहा है हमें कुछ पता नहीं, पर वे निश्चित रूप से हमारे देश और समाज के हितचिंतक तो नहीं लगते। नकारात्मकता और केवल राजनीतिक विषयों के ही समाचार आज चारों तरफ उपलब्ध हैं। ऐसे में उत्साह पैदा करने वाले, सकारात्मक समाज को दिशा प्रदान करने वाले, राष्ट्र को आगे बढ़ाने वाली बातें कहीं उपलब्ध होनी चाहिए। पाथेय पत्रिका उसी के प्रयास में लगी हुई है।

पाथेय कण व्यावसायिक नहीं है। पाथेय सत्य तथ्य और राष्ट्रहित को आगे रखकर काम करता है। अपेक्षित समाचार जो समाज के लिए आवश्यक है, पाथेय कण उनको जगह देता है। आज के युग में जो जरूरी बातें हैं, जिन्हें साथ लेकर चला जा सकता है, ऐसे विचार छापने के लिए पाथेय कण प्रतिबद्ध है। अपनी सत्यनिष्ठा के कारण ही पाथेय कण आज भारत की सबसे बड़ी मैग्जीन है जो सर्वाधिक गांवों तक प्रसारित हो रही है।

आज अन्य मीडिया घराने अपने लाभ के लिए समाज में वैमनस्य पैदा कर देते हैं, सनसनी फैला कर अपने दर्शकों और पाठक वर्ग को बढ़ाना चाहते हैं, जबकि पाथेय के लिए देशहित और सामाजिक सद्भाव प्रथम है। हमारी संपादकीय टीम बहुत परिश्रम करके समाजोपयोगी मनोवैज्ञानिक युगानुकूल सामग्री संग्रह करती है। आप सभी के सहयोग से इस बार पत्रिका के पाठकों में वृद्धि हुई है। राजस्थान के 75 प्रतिशत गांवों तक यह पत्रिका जाती है।

बचपन से ही पाथेय कण की पाठक रही चिकित्सक डॉ. मधु गाडी का कहना था- *''मोबाइल और टीवी के इस युग में पाथेय कण मनोचिकित्सक का काम करती है। इसकी सकारात्मक सामग्री जीवन में अनेक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण है।''*

शिक्षक ओम दान 25 वर्षों से पाथेय कण के पाठक है। उनका कहना है, *''राष्ट्र भक्तियुक्त पत्रकारिता के लिए पाथेय कण अनुकरणीय है। चाहे कारगिल युद्ध हो या अन्य कोई संकट, यह पत्रिका देश की बात को मुखरता से कहती है।''*

सरपंच सुनील पालीवाल के अनुसार- *'' ये पुस्तक छोटी भले ही है, परंतु इसकी सामग्री में प्रामाणिकता बहुत है। गाँव शहर के जमघट वाले स्थानों पर यह पत्रिका जरूर रखनी चाहिए।''*

कार्यक्रम के अध्यक्ष वयोवृद्ध कवि और साहित्यकार अम्बादान ने कहा,*'' प्राचीन गूढ़ साहित्य का सरल सार पाथेय में छपता है जो आज के युग में तपस्या से कम नहीं। हमें बिना पुरुषार्थ के इतनी अनमोल सामग्री मिलती है, लाभ उठाना चाहिए।''* शिक्षक राकेश और देवराज का कहना है *''पाथेय कण से कक्षा में पाठ रोचक बन जाते हैं। इसके विषय विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन करते हैं।''*

सुनील रामलाल जी ने बताया कि उन्होंने पाथेय के अब तक के सभी अंक संग्रहित कर रखे हैं। पाथेय कण द्वारा उनका स्मृति चिह्न देकर सम्मान किया गया। 25 वर्ष पुराने पाठक उत्तम सिंह राजपुरोहित, रामलाल गौड़ व पारसमल जैन को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सभी को पाथेय कण के संग्रहणीय विशेषांक तथा संघ की पर्यावरण गतिविधि द्वारा एक हजार पौधे भेंट किए गए। ■

# माता अरुंधती

भारतवर्ष की प्रातः स्मरणीया महान स्त्रियों में अरुंधती का नाम अग्रणी है। परम सती और ज्ञान से परिपूर्ण अरुंधती महर्षि वशिष्ठ की धर्मपत्नी थी।

ब्रह्माजी की मानस पुत्री संध्या ने भगवान शिव की गहन तपस्या की तथा उनसे वरदान माँगा कि वे उन्हें सांसारिक वासना से मुक्त कर दें। शिवजी के आशीर्वाद स्वरूप उस कन्या का जन्म ऋषि कर्दम और देवहुति की पुत्री अरुंधती के रूप में हुआ। यह भी माना जाता है कि उनकी उत्पत्ति मेधातिथि के यज्ञकुंड से हुई थी। अरुंधती जन्म से ही अत्यंत सात्विक वृत्ति की थी। अरुंधती जब पांच वर्ष की थी तभी ब्रह्मा जी ने इनके पिता को कन्या का विद्याध्ययन कराने के लिए प्रेरित किया। बालिका अरुंधती ने सूर्यलोक में सावित्री के पास रह कर सात वर्ष में सम्पूर्ण विद्या प्राप्त कर ली।

बड़ी होने पर इनका विवाह परम तपस्वी महर्षि वशिष्ठ से हुआ। राजा दिलीप और उनकी पत्नी सुदक्षिणा ने संतान प्राप्ति के लिए इन्हीं के आश्रम में रहकर नन्दिनी गाय की सेवा की और मनोवांछित वरदान पाया था।

वशिष्ठ और अरुंधती का जोड़ा आदर्श पति-पत्नी के रूप में पूज्य है। महर्षि वशिष्ठ का स्थान सप्तर्षि मंडल के एक तारे के रूप में अक्षय माना गया है। इसी वशिष्ठ तारे के निकट एक तारिका अरुंधती के रूप में जानी जाती है। विवाह संस्कार के अवसर पर वर-वधू को तारा रूप में स्थित वशिष्ठ और अरुंधती के दर्शन कराने का विधान है।

इन्हीं के वंश में तीसरी पीढ़ी में वेदव्यास और चौथी पीढ़ी में शुकदेव पैदा हुए।

*-इंदुशेखर 'तत्पुरुष'*



## राजस्थान की 'कांग्रेस सरकार' का कारनामा

# जयपुर के आराध्य 'गोविंद देव जी' के चढ़ावे में से 9 करोड़ 82 लाख 'ईदगाह' के लिए दिए

## जबकि अजमेर दरगाह का चढ़ावा दिवान व खादिमों में बंट रहा!

क्या मंदिरों का पैसा मस्जिदों को बांट दिया गया है? इस संबंध में विधान सभा में सिविल लाइंस विधायक श्री गोपाल शर्मा ने कहा कि जयपुर के आराध्य गोविंद देव जी मंदिर के 9 करोड़ 82 लाख रुपए बिना किसी परियोजना व रिपोर्ट के ईदगाह के लिए दे दिए गए। उन्होंने प्रश्न पूछा कि देवस्थान का पैसा ईदगाह को कैसे दे सकते हैं, इतना ही नहीं अन्य मंदिरों से लिए गए दो करोड़ 45 लाख 50 हजार रुपए भी मस्जिद व दरगाह के लिए दिए गए हैं। जिसमें से एक करोड़ 90 लाख रुपए खर्च भी हो चुके हैं। गोविंद देव जी मंदिर के लिए होल्ड और ईदगाह को समर्पण यह कौन सा न्याय है।

श्री शर्मा ने कहा कि मंदिर माफी की जमीन (मंदिर के खर्चे के लिए नियत भूमि) को कांग्रेस राज में जलमहल के पास मंदिर माफी की जमीन को अलॉट कर होटल बनवाया। उन्होंने कहा कि मंदिरों का चढ़ावा मस्जिदों के विकास पर खर्च करना कहां का न्याय है। जबकि अजमेर दरगाह पर जो चढ़ावा आता है वह दीवान व खादिमों में बंटता है न कि विकास कार्यों पर। मेरा मानना है कि सरकार किसी भी दल की हो पर सम्प्रदायगत भेदभाव न्यायोचित नहीं है।

**पर्यावरण संरक्षण**

# एक पेड़ माँ के नाम, प्रकृति वंदन व वृक्ष कथा-कीर्तन के अंतर्गत हो रहा पर्यावरण संरक्षण का कार्य

पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में इन दिनों अनेक नवाचार देखने को मिल रहे हैं। राजस्थान में कहीं एक पेड़ माँ के नाम, वृक्ष कथा-कीर्तन व वृक्ष बिंदोरी तो कहीं प्रकृति वंदन कार्यक्रम के अंतर्गत पौधारोपण अभियान जोरों पर है। **उदयपुर** में स्वदेशी जागरण मंच के कार्यकर्ताओं ने इस अभियान के तहत बड़ी संख्या में पौधारोपण किया। नगरीय क्षेत्र में पशु-पक्षियों और छोटे उड़ने वाले जीवों के लिए फलदार मौसमी वृक्ष लगाए।

इसी प्रकार लघु उद्योग भारती की **भरतपुर** इकाई द्वारा नगर में अलग-अलग स्थानों पर वृक्षारोपण किया। इकाई द्वारा 2 हजार पौधे लगाने का लक्ष्य रखते हुए लोगों से अपील की है कि अधिक से अधिक पौधारोपण कर पौधों की सुरक्षा का दायित्व भी लें। **लालसोट (दौसा)** में 10-10 फीट लम्बे पौधे बस्तियों में भी वितरण हेतु लाए गए हैं। इन्हें मानव केशव वृक्ष बैंक में रखा गया है, जहां से इनका वितरण कर रहे हैं।

**मुरलीपुरा (जयपुर)** के किशोर नगर व गणेश नगर में वृक्ष कथा और कीर्तन के पश्चात् वृक्ष बिंदोरी निकाली गई। बिंदोरी में बैंड बाजे की धुन पर नाचते विद्यार्थी, पर्यावरण संरक्षण के नारे लगाते हुए समाज के लोग तथा मंगल गीत गाते हुए महिलाएं शामिल थीं। बिंदोरी के दौरान अनेक स्थानों पर पर्यावरण चेतना जगाने वाले लोगों का समाजजनों द्वारा स्वागत किया गया। तत्पश्चात् वृक्ष आरती कर सभी लोगों ने अधिकाधिक पौधारोपण करने का संकल्प लिया। बिंदोरी में आए हुए लोगों को जुहारी के रूप में पौधे तथा कपड़े के थैले वितरित किए गए। प्रदेश को हरा भरा बनाने के इस प्रयास में बच्चे भी पीछे नहीं हैं।

# अपनों से अपने को जोड़ने का माध्यम है वंशावली परम्परा

अ.भा.वंशावली संरक्षण एवं संवर्धन संस्थान का एक बड़ा कार्यक्रम बीती 28 जुलाई को जयपुर में हुआ। संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं अ.भा.धर्म जागरण सह प्रमुख श्री अरुण कांत ने इसे संबोधित करते हुए कहा कि देश के 4 हजार 200 वंश लेखकों के नाम इस संस्थान के पास हैं, जिनमें सर्वाधिक राजस्थान के 2 हजार 500 वंश लेखक शामिल हैं। अरुण कांत जी का कहना था कि प्राचीन काल से वंशावली की परम्परा हमारे देश में चली आ रही है, लेकिन आज वंशावली लेखकों में दूरियां बढ़ती जा रही हैं। इसके लिए हमें मिलकर प्रयास करना होगा।

संस्थान के अध्यक्ष श्री परमेश्वर ब्रह्मभट्ट ने बताया कि वंशावली के माध्यम से हिंदू समाज को टूटने से बचाया जा सकता है। वंश लेखकों तथा युवा वंश लेखकों का संस्थान की ओर से स्वागत-सम्मान किया गया।

# शिक्षा और शोध भारत केन्द्रित, भारत हित और भारतीय मूल्यों पर आधारित हो

शिक्षा में पुन: भारतीयता प्रतिष्ठित करने हेतु अखिल भारतीय संगठन 'भारतीय शिक्षण मंडल' कार्यरत है। मंडल द्वारा शिक्षा नीति, पाठ्यक्रम एवं पद्धति तीनों भारतीय मूल्यों पर आधरित, भारत केन्द्रित व भारत हित की हो, इस दृष्टि से संगठन वैचारिक, शैक्षिक और व्यावहारिक गतिविधियों का आयोजन करता है।

इसी कड़ी में बीती 29 जुलाई को 'विजन फॉर विकसित भारत' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन जयपुर में किया गया। इसके अंतर्गत शोधपत्र लेखन, चिकित्सा, शिक्षा और अनुसंधान जैसे विषयों पर चिंतन-मनन हुआ।

चिकित्सा विषय पर आईसीएमआर दिल्ली के पूर्व महानिदेशक डॉ. विश्व मोहन कटोंच ने कहा कि चिकित्सा को मूल मानवाधिकार मानते हुए समाज के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक इसकी पहुंच होनी चाहिए तथा सम्पूर्ण समाज को इसका लाभ मिलना चाहिए। सेमिनार एसएमएस मेडिकल कॉलेज के सभागार में रखी गयी थी।



# महान दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

भारत के द्वितीय राष्ट्रपति, प्रथम उपराष्ट्रपति, अनेक विश्वविद्यालयों के कुलपति, सोवियत संघ में भारत के राजदूत रहे महान विचारक, दार्शनिक, कुशल वक्ता डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन महान शिक्षाविद् थे। इनके जन्म दिवस 5 सितम्बर को संपूर्ण भारत सन 1962 से 'शिक्षक दिवस' के रूप में मना रहा है । एक दर्शनशास्त्र के शिक्षक की भारत के राष्ट्रपति बनने की यात्रा सबको विनम्र, संस्कारी , विद्वान और कर्मयोगी बनने की प्रेरणा देती है।

जब भारत अंग्रेजों का गुलाम था तब अंग्रेज अपने रंग, धर्म और सभ्यता पर बहुत अभिमान करते थे और भारतीयों के रंग, धर्म और संस्कृति को अपमानित करने का कोई अवसर नहीं छोड़ते थे। अंग्रेजों के इस दंभ ने डॉ. राधाकृष्णन को भारतीय धर्म, दर्शन और शास्त्रों का विशद अध्ययन करने को प्रेरित किया। भारतीय दर्शन का गहन अध्ययन करने के पश्चात उन्होंने अंग्रेजों के क्षुद्र ज्ञान और भारतीय ज्ञान, धर्म और दर्शन को अपने लेखों और व्याख्यानों द्वारा संपूर्ण विश्व में प्रतिष्ठित किया । स्वामी विवेकानंद से प्रेरित होकर डॉ. राधाकृष्णन ने सनातन धर्म से पूरे विश्व को एक बार पुन: परिचित करवाया।

एक बार की बात है एक अंग्रेज भद्र लोगों की सभा में अपने को श्रेष्ठ और भारतीयों को निकृष्ट बताने के लिए अपने रंग, नस्ल और अपनी सभ्यता का गुणगान कर रहा था और भारतीयों का मजाक उड़ा रहा था तब डॉक्टर राधाकृष्णन ने अपने व्याख्यान में कहा-

''जब सृष्टि का निर्माण यानि महासर्ग हो रहा था तब परमात्मा रसोई में खाना पका रहे थे। जो रोटियां कच्ची रह गई वे सफेद यानि गोरे लोग बन गये। जो रोटियां ज्यादा सिक गईं या जल गईं, वे लोग काले यानि नीग्रो बन गये । किन्तु जो रोटियां बिल्कुल सही बनी वे भारतीय बने तभी तो यहां वेद, उपनिषद् और श्रीमद्भगवद्गीता जैसे शास्त्रों की रचना संभव हो सकी।''

डॉक्टर राधाकृष्णन के इतना कहते ही पूरा सभागार तालियों से गड़गड़ा उठा। उन अंग्रेज लाट साहब का सिर शर्म से झुक गया। ऐसे महाविज्ञ, हाजिर जवाब और भारतीय दर्शन के प्रखर चिंतक डॉक्टर राधाकृष्णन को कोटि कोटि नमन ।

**-हरिशंकर गोयल 'श्री हरि'**
आचार्य श्रीमद्भगवद्गीता

*पुण्यश्लोका अहिल्याबाई की त्रिशताब्दी जयंती पर जोधपुर में संपन्न हुआ प्रबुद्ध मातृशक्ति सम्मेलन। संघ के पूर्व सरकार्यवाह श्री सुरेश भैयाजी जोशी थे मुख्य वक्ता। अध्यक्षता जोधपुर की पूर्व महारानी हेमलता राजे ने की (28 जुलाई, 2024)*

*संकल्प, जयपुर द्वारा भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित प्रतिभागियों का अभिनंदन समारोह पाथेय भवन के देवर्षि नारद सभागार में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि थे राजस्थान के युवा एवं खेल मंत्री राज्यवर्धन सिंह। ( 27 जुलाई, 2024)*

*अ.भा. साहित्य परिषद, जयपुर*

## सर्व भाषा साहित्यकार सम्मान

*अ.भा.साहित्य परिषद, जयपुर द्वारा आयोजित सर्व भाषा साहित्य सम्मान समारोह में सम्मानित साहित्यकार बाएं से दाएं क्रमश: डॉ.हेमंत कुमार चतुर्वेदी, डॉ.विजय कुमार, श्री गुलाब चंद शर्मा तथा डॉ.मनजीत कौर। कार्यक्रम के अध्यक्ष थे डॉ. ओमप्रकाश भार्गव, मुख्य वक्ता पाथेय कण के संपादक श्री रामस्वरूप अग्रवाल व विशिष्ट अतिथि श्री मानसिंह। (9 अगस्त, 2024)*

# भारतीय जवानों के अदम्य साहस का प्रतीक सारागढ़ी युद्ध

1897 में 36वीं सिख रेजिमेंट के अधिकारी

सारागढ़ी की लड़ाई आज से ठीक 127 साल पहले यानी 12 सितम्बर,1897 को लड़ी गई थी। इसके एक तरफ ब्रिटिश भारतीय सेना की 36वीं (सिख) रेजिमेंट ऑफ बंगाल इन्फ्रैंट्री (अब सिख रेजीमेंट की चौथी बटालियन के नाम से जानी जाती है) के महज 21 सिख जवान थे तो दूसरी ओर अफगान कबायलियों की 10 हजार की विशाल फौज थी। यह लड़ाई वर्तमान पाकिस्तान के खैबर-पख्तूनख्वा प्रांत में लड़ी गई थी। दरअसल अफगानिस्तान की कुछ जनजातियों ने गुलिस्तान और लॉकहार्ट किलों पर कब्जा करने के उद्देश्य से यह हमला किया था। ये दोनों किले भारत-अफगान सीमा के पास स्थित थे, जिनका निर्माण महाराजा रणजीत सिंह ने करवाया था। लॉकहार्ट और गुलिस्तान किले के पास सारागढ़ी चौकी थी। यह सैनिकों के लिए अधिकारियों से संवाद करने का मुख्य केन्द्र था। यहीं पर सिख रेजीमेंट के 21 जवान तैनात थे। जिन्होंने दस हजार पख्तूनों से लोहा लिया और अतिरिक्त सेना के पहुँचने तक उन्हें आगे बढ़ने से रोककर रखा। इस लड़ाई में वीरगति पाने तक अद्भुत शौर्य का प्रदर्शन करते हुए भारतीय जवानों ने सैंकड़ों पठान कबायलियों को मार गिराया। सैन्य इतिहासकारों का मानना है कि सारागढ़ी की लड़ाई दुनिया की सबसे बड़ी लड़ाइयों में से एक है,जो मुट्ठी भर सैनिकों की अतुलनीय वीरता का प्रतीक है। बाद में उन सभी 21 सैनिकों को उनके अदम्य साहस और बहादुरी के लिए मरणोपरांत उस समय के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार 'इंडियन आर्डर ऑफ मेरिट' ब्रिटिश भारत का सैन्य व नागरिक सम्मान से सम्मानित किया गया।

तभी से हर साल भारतीय सेना की सिख रेजीमेंट की चौथी बटालियन 12 सितम्बर को 'सारागढ़ी दिवस' के रूप में मनाती है। इस दिन उन बहादुर सैनिकों के बलिदान को याद किया जाता है, जिन्होंने ब्रिटिश सेना की एक चौकी की रक्षा के लिए दुश्मनों का अंतिम सांस तक डटकर मुकाबला किया था। सिख सैनिकों की याद में इंग्लैण्ड के वोवर हैम्पटन के वेडेंसफील्ड में सिख सैनिकों की एक टुकड़ी का नेतृत्व करने वाले हवलदार ईशर सिंह की 10 फीट ऊँची प्रतिमा लगाई गई है। इस ऐतिहासिक घटना पर 'केसरी' नाम से फिल्म भी बनी है। ■ (मनोज गर्ग)

## गुरु दक्षिणा हो तो ऐसी

# शिष्यों ने सप्ताहभर मनाया एक शिक्षक का सेवानिवृत्ति समारोह

एक शिक्षक के लिए उसके शिष्यों का योग्य होना सबसे बड़ी सफलता है। कुछ ऐसे ही शिष्यों ने सफल होकर नागौर के गोगेलाव राजकीय विद्यालय में पीटीआई शिक्षक श्री हनुमान देवड़ा का मान बढ़ाया है। शिष्यों ने अपने गुरु के विदाई समारोह को खेल सप्ताह के रूप में आयोजित कर पौधारोपण, रक्तदान शिविर सहित कई अन्य प्रतियोगिताओं आयोजन करवाया। इस दौरान दिव्यांग व निराश्रित बच्चों को पाठ्य पुस्तक व गणवेश भी वितरित की गई।

यह आयोजन 419 पूर्व छात्रों द्वारा आयोजित किया गया जो देवड़ा जी के शिष्य रहे हैं और अब सरकारी सेवाओं व निजी व्यवसाय में संलग्न हैं। शिष्यों द्वारा उनको एक कार भी भेंट की गई।

आपकी प्रेरणा से 65 विद्यार्थी सेना में, 20 विद्यार्थी पुलिस के अन्य पदों पर, 15 से अधिक विद्यार्थी शारीरिक शिक्षक तथा 18 से अधिक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी बने हैं। सेना में कार्यरत सूबेदार बुद्धाराम बिजारणियां अंतरराष्ट्रीय धावक हैं। शिक्षक समाज में देवड़ा जी अपनी निष्ठा, प्रामाणिकता के लिए दूर-दूर तक उदाहरण के रूप में ख्यात हैं।

# 134 बेटियों ने धारण किया जनेऊ

बीती 30 जुलाई को अमरोहा के चोटीपुरा स्थित श्रीमद् दयानंद कन्या गुरुकुल महाविद्यालय में कक्षा सात की 134 बालिकाओं का उपनयन तथा वेदारंभ संस्कार कराया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघसंचालक डॉ. मोहनराव भागवत ने कहा कि इस प्रकार के संस्कार हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सजीव रखते हैं और आने वाली पीढ़ियों को भारत की समृद्ध परंपराओं से जोड़ते हैं। उन्होंने

कहा मातृवर्ग संघ की अप्रत्यक्ष कार्यकर्ता हैं। धर्मोन्नति और देशोन्नति एक ही है। हमें अपने धर्म और आचरण की संस्कृति संपूर्ण विश्व को प्रदान करनी चाहिए।

## आगामी पक्ष के विशेष अवसर
**( 1 से 15 सितम्बर, 2024)**
**( भाद्रपद कृ.14 से भाद्रपद शु.12 तक )**

***जन्म दिवस***

1 सितम्बर (1896)- भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद
1 सितम्बर (1909)- फादर कामिल बुल्के
3 सितम्बर (1914)- यादव राव जोशी
4 सितम्बर (1825)- दादा भाई नौरोजी
5 सितम्बर (1888)- डॉ. राधाकृष्णन
भाद्रपद शु.3 (6 सित.)- वराह जयंती
7 सित.(1887)- पं.गोपीनाथ कविराज
9 सितम्बर (1880)- अर्जुन लाल सेठी
9 सितम्बर (1850)- भारतेन्दु हरिशचन्द
भाद्रपद शु.6(9 सित.)- बलराम
भाद्रपद शु.8(11 सित.)- महर्षि दधीचि
भा. शु.10(13 सित.)- बाबा रामदेव, तेजाजी महाराज
भाद्रपद शु.12(15 सितम्बर)- वामन जयंती
15 सित. (1892)- बाबा पृथ्वी सिंह आजाद
15 सित.(1861)- मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया

***बलिदान दिवस / पुण्यतिथि***

2 सित.(1933)-अनाथ बन्धु पंजा का बलिदान
3 सित.(1933)-मृगेन्द्र कुमार दत्त का बलिदान
5 सित.(1730)- अमृता देवी का बलिदान
5 सित.(2005)-मेजर धनसिंह थापा की पुण्यतिथि
9सित.(1915)-चित्तप्रिय रायचौधरी का बलिदान
10 सित.(1915)- बाघा जतीन का बलिदान
13 सित. (1929)- यतीन्द्र नाथ का बलिदान
15 सित.(2007)- डॉ.राकेश पोपली का बलिदान

***महत्वपूर्ण घटनाएं / अवसर***

4 सित.(1669)-काशी-विश्वनाथ मंदिर ध्वंस
भा.शु.1(4 सित.)- गुरुग्रंथ साहब प्रकाशोत्सव
11 सित. (1893)- स्वामी विवेकानन्द का शिकागो विश्वधर्म संसद में प्रथम ऐतिहासिक भाषण
12 सितम्बर (1897)- सारागढ़ी दिवस

***सांस्कृतिक पर्व / त्योहार***

22 अगस्त - सातुड़ी तीज
24 अगस्त - चांद छठ
27 अगस्त - गोगामेड़ी मेला (हनुमानगढ़)
30 अगस्त - बीछ बारस

## पेरिस ओलंपिक : भारतीय पदक विजेता

फ्रांस की राजधानी पेरिस में आयोजित ओलंपिक खेलों में भारत के पदक विजेता-

| | |
|---|---|
| नीरज चौपड़ा | -भाला फेंक (रजत) |
| मनु भाकर | - शूटिंग (कांस्य) |
| सरबजोत सिंह एवं मनु भाकर | -शूटिंग मिक्स (कांस्य) |
| टीम इंडिया | - हॉकी (कांस्य) |
| स्वप्निल कुसाले | - शूटिंग (कांस्य) |
| अमन सहरावत | - कुश्ती (कांस्य) |

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है? : 1. ले.जनरल अनिल चौहान 2. बांसवाड़ा 3. विद्या समीक्षा केन्द्र 4. अनामिका बी.राजीव 5. नोएडा 6. राजस्थान 7. ज्योतिर्मठ 8.महाराणा प्रताप 9. कोटा 10. मेरी मातृभूमि-मेरी जिम्मेदारी

## पंचांग- भाद्रपद (कृष्ण पक्ष) 20 अगस्त से 3 सितम्बर, 2014 तक

**सातुड़ी तीज**-22 अगस्त, **संकष्ट चतुर्थी व कजली तीज व्रत**- 22 अगस्त, **पंचक समाप्त**- 23 अगस्त (सांय 7.54 बजे), **चांद छठ व्रत**-24 अगस्त, **अजा एकादशी व्रत**-29 अगस्त, **बीछ बारस**-30 अगस्त, **शनि प्रदोष व्रत**-31 अगस्त, **जैन पर्युषण प्रारम्भ**-31 अगस्त, **सोमवती पितृकार्य अमावस्या**- 2 सितम्बर, **देवकार्य अमावस्या**- 3 सितम्बर

**ग्रह स्थिति : चन्द्रमा :** 20-21 अगस्त को **कुंभ** राशि में, 22-23 अगस्त को **मीन** राशि में, 24-25 अगस्त को **मेष** राशि में, 26-27 अगस्त को उच्च की राशि **वृष** में, 28 से 30 अगस्त **मिथुन** राशि में, 31 अगस्त व 1 सितम्बर को स्वराशि **कर्क** में तथा 2-3 अगस्त को **सिंह** राशि में गोचर करेंगे।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष में **गुरु** व वक्री **शनि** यथावत वृष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमशः पूर्ववत मीन व कन्या राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** यथावत सिंह राशि में स्थित रहेंगे। **मंगल** 26 अगस्त को दोपहर 3:25 बजे वृष से मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे। **बुध** 28 अगस्त रात 2:42 बजे तथा **शुक्र** 24 अगस्त को रात्रि 1:16 बजे सिंह से कन्या राशि में प्रवेश करेंगे।

## कृष्ण जन्मस्थली : मथुरा

मथुरा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में यमुना के तट पर बसा एक प्राचीन नगर है जो भगवान कृष्ण की जन्मस्थली है। इसका प्राचीन नाम मधुरा था जो कालांतर में मथुरा हो गया। इसे मधुनगरी, मधुपुरी, शूरसेन नगरी के नाम से भी जाना जाता था। देवर्षि नारद के निर्देशानुसार बालक ध्रुव ने इसी स्थान पर तपस्या करके भगवान के दर्शन किये। त्रेता युग में शत्रुघ्न ने भगवान राम की आज्ञा से अत्याचारी लवणासुर का वध कर मथुरा का राज्य अपने हाथ में लिया। द्वापर युग में, भगवान कृष्ण ने अत्याचारी राजा कंस को मारकर अपने अवतार के उद्देश्य को सार्थक किया। श्रीकृष्ण के प्रपौत्र वज्रनाभ ने केशवदेव जी की मूर्ति स्थापित की। इसी प्राचीन केशव मंदिर के स्थान को केशव कटरा कहते हैं। मुस्लिम शासन के दौरान औरंगजेब ने कृष्ण जन्मभूमि स्थित मंदिर को तोड़कर शाही ईदगाह मस्जिद का निर्माण किया। मथुरा-वृंदावन क्षेत्र हमेशा कृष्ण के अपार आकर्षण और भक्ति का केन्द्र रहा है। मथुरा के चारों ओर चार शिव मंदिर हैं- पूर्व में पिपलेश्वर, दक्षिण में रंगेश्वर, उत्तर में गोकर्णेश्वर और पश्चिम में भूतेश्वर महादेव। चारों दिशाओं में स्थित होने के कारण भगवान शिव को 'मथुरा का कोतवाल' कहा जाता है। मथुरा मोक्ष प्रदायनी सप्तपुरियों में से एक है।

## दिवस

**शिक्षक दिवस :** 5 सितम्बर

**अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस :** विश्व स्तर पर शिक्षा के महत्व को दर्शाने व निरक्षरता को समाप्त करने के उद्देश्य से यूनेस्को की पहल पर पहला साक्षरता दिवस वर्ष 1966 में मनाया गया।

## घातक बीमारी को दावत देते नॉन-स्टिक बर्तन

इंडियन मेडीकल कौंसिल, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रिशन व राष्ट्रीय पोषण संस्थान (एनआईएन) द्वारा जारी गाइडलाइन में बताया गया है कि नॉन-स्टिक बर्तनों में खाना बनाते समय हानिकारक रसायन निकलते हैं जो खाने में मिल जाते हैं और कई बीमारियों को जन्म देते हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों की मानें तो नॉन-स्टिक बर्तन में बना खाना कैंसर जैसी घातक बीमारी को जन्म दे सकता है। एनआईए के मुताबिक नॉन-स्टिक बर्तनों में खाने की पौष्टिकता जहां कम हो जाती है वहीं दूसरी ओर थॉयराइड और बच्चों के जन्म में भी परेशानी होती है।

## घरेलू नुस्खा

ताजी नीम की पत्तियों का रस निकाल कर गुलाब जल के साथ मिलाकर चेहरे पर रोजाना लगाने (रात को सोने से पहले) से चेहरे के दाने व उसके निशान गायब हो जाते हैं।

## कुकिंग / किचन टिप्स

- आवश्यकतानुसार पानी में नींबू और गुलाब जल की बूंदें मिलाकर किचन स्लैब (चिकनाईयुक्त) साफ करें। इससे स्लैब की सफाई तो जाएगी साथ ही रसोई घर खुशबू में महक उठेगा।

## आओ संस्कृत सीखें-42

- जन्मदिन की बधाई।
- **जन्मदिनस्य शुभाशयाः ।**

## गीता- दर्शन

**एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।**
**अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति।।**

श्रीकृष्ण कहते हैं, हे पार्थ! जो पुरुष इस लोक में परम्परा से प्रचलित सृष्टि चक्र के अनुकूल नहीं रहता अर्थात् अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता, वह इन्द्रियों के द्वारा भोगों में रमण करने वाला पापायु पुरुष व्यर्थ ही जीता है। (3/16)

## चुप संख्या ज्ञात करो

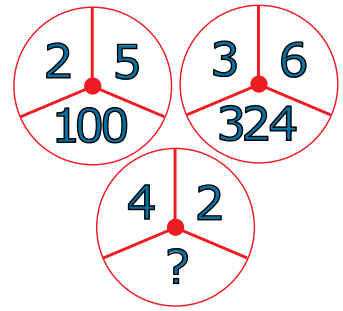


उत्तर इसी अंक में...

## जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें- **सामान्य**- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. देश का दूसरा चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ किसे नियुक्त किया गया है?
2. देश का दूसरा सबसे बड़ा न्यूक्लियर पावर प्लांट राजस्थान में कहां बन रहा है?
3. नई शिक्षा नीति के तहत स्कूली बच्चों की प्रोग्रेस पर नजर रखने के लिए किस केन्द्र की स्थापना की गई है?
4. भारतीय नौसेना की पहली महिला हेलीकॉप्टर पायलट कौन बनी है?
5. मोटोजीपी (मोटर साइकिल रेसिंग) का आयोजन 2025 में भारत के किस शहर में किया जायेगा?
6. भूगर्भजल सर्वेक्षण-2023 की रिपोर्ट के अनुसार देश में सबसे अधिक डार्क जोन किस राज्य में है?
7. चमोली जिले (उत्तराखण्ड) की जोशीमठ तहसील को अब किस नाम से जाना जायेगा?
8. चावण्ड मेवाड़ के कौन से महाराणा की राजधानी थी?
9. देश का सबसे बड़ा गोबर आधारित बायोगैस प्लांट कहाँ स्थापित किया गया है?
10. बीकानेर के प्रवासी नागरिकों ने जिले के विकास हेतु कौन सा अभियान शुरू किया है?

कथा

## मूर्तिकार

मूर्तिकार पिता अपने बेटे की बनी मूर्तियों से खुश तो होता था लेकिन हर बार बेटे की मूर्तियों में कोई ना कोई कमी निकाल दिया करता था।

बेटा भी पिता की सलाह पर मूर्तियों को और बेहतर करता रहा। लगातार सुधार की वजह से बेटे की मूर्तियाँ पिता से भी अच्छी बनने लगी और एक समय ऐसा आया कि लोग बेटे की मूर्तियों को बहुत पैसा देकर खरीदने लगे जबकि पिता की मूर्तियाँ कम कीमत पर ही बिकती रही।

एक समय बाद उसने पिता की सलाह लेना बंद कर दिया। पिता ने भी बेटे की मूर्तियों में कमियाँ निकालना बंद कर दिया। कुछ महीने बाद उसने महसूस किया कि लोगों ने उसकी मूर्तियों के दाम बढ़ाना बंद कर दिए हैं।

वह पिता के पास गया और उन्हें समस्या बताई। पिता ने जवाब दिया, जब मैं तुम्हारी मूर्तियों में कमियाँ दिखाता था, तब तुम अपनी बनाई मूर्तियों से संतुष्ट नहीं होते थे। तुम खुद को बेहतर करने की कोशिश करते थे और वही बेहतर होने की कोशिश तुम्हारी कामयाबी का कारण था। लेकिन जिस दिन तुम अपने काम से संतुष्ट हो गए और तुमने यह भी मान लिया कि अब इसमें और बेहतर होने की गुंजाइश ही नहीं है, तब तुम्हारा विकास रुक गया। यही कारण है कि अब मूर्तियों के लिए तुम्हारी तारीफ नहीं होती हैं। ना ही उनके लिए तुम्हें ज्यादा पैसे मिलते हैं।

अपने हुनर से असंतुष्ट होना सीख लो, यही एक बात तुम्हें हमेशा बेहतर होने के लिए प्रेरित करती रहेगी । आलोचनाओं और सुझावों को समान रूप से सम्मान देते हुए उनके अनुसार परिवर्तन करके ही उन्नति संभव है।

## वर्ग पहेली

विभिन्न देशों की मुद्राओं के नाम खोजिए

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रु | प | या | ड | उं | पा |
| दी | ब | डा | न | आ | यु |
| पा | र | ल | डॉ | ये | रो |
| क्रो | ना | ब | या | कू | यू |
| ऊ | दी | का | ट | रि | प |

रुपया, रियाल, पाउंड, दीनार, येन, यूरो, डॉलर, रूबल, क्रोना, रुपया

## बाल प्रश्नोत्तरी - 61

जीतें पुरस्कार अब दूसरी और तीसरी बार भी

बाल मित्रों, 01 जुलाई का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 को प्रमाण-पत्र तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - **05 सितम्बर, 2024**

**1. नालंदा विश्वविद्यालय पर हमला करने वाला मुगल आक्रांता कौन था?**
(क) बख्तियार खिलजी (ख) अलाउद्दीन खिलजी (ग) औरंगजेब (घ) मोहम्मद तुगलक

**2. अजमेर जिले में ब्रह्मलोक कॉरिडोर कहां बनाया जा रहा है?**
(क) नसीराबाद (ख) पुष्कर (ग) ब्यावर (घ) केकड़ी

**3. राजनैतिक हिंसा में पिछले 50 वर्षों में पश्चिम बंगाल में कितने लोग मारे गए?**
(क) 20 हजार (ख) 40 हजार (ग) 30 हजार (घ) 25 हजार

**4. कर्नाटक के किस जिले में हिजाब पहनने पर रोक लगाई गई है ?**
(क) मैसूर (ख) चिकमगलूरु (ग) मंड्या (घ) उडूपी

**5. दिल्ली का राम पिथौरा किला किस सम्राट द्वारा बनाया गया है?**
(क)पृथ्वीराज चौहान (ख) महाराणा प्रताप (ग) दाहिरसेन (घ) सूरजमल

**6. शब्दभेदी बाण चलाकर पृथ्वीराज चौहान ने किसे मारा था?**
(क) मुहम्मद गौरी (ख) महमूद गजनवी (ग) इब्राहिम लोधी (घ) अकबर

**7. जम्मू-कश्मीर में किस नदी पर सबसे ऊँचा रेल पुल बनाया गया है?**
(क) कावेरी (ख) चिनाव (ग) गंगा (घ) नर्मदा

**8. किसके शासन काल में ( 25 जून,1975 ) भारत में आपातकाल लगा था?**
(क) जवाहरलाल नेहरू (ख)इंदिरा गांधी (ग)मोरारजी देसाई(घ)गुलजारीलाल नंदा

**9. महाराजा दाहिरसेन की धर्म पत्नी का नाम क्या था?**
(क) मांगी बाई (ख) लाडी बाई (ग) केशुबाई (घ) जसोदा बाई

**10. क्रांतिकारी सरदार उधम सिंह ने माइकल डायर को कहाँ जाकर मारा था?**
(क) इटली (ख) लंदन (ग) इंग्लैण्ड (घ) ब्रिटेन

## समीकरण हल कीजिए

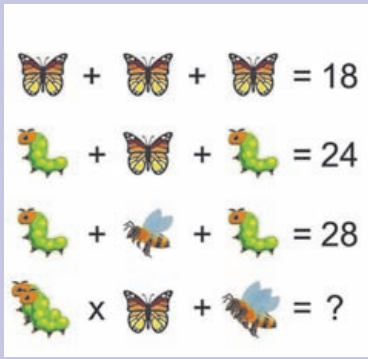

उत्तर : 6 x 9 + 10 = 64

## बाल प्रश्नोत्तरी-59 के परिणाम

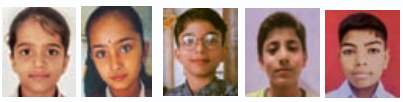

प्रतिष्ठा किरण विशाल केशव दिलखुश

1. प्रतिष्ठा कंवर, पर्वतपुरा, अजमेर
2. किरण कंवर, गडरा रोड, बाड़मेर
3. विशाल कुमार, नया सानवाड़ा, सिरोही
4. केशव व्यास, डिग्गी मालपुरा, टोंक
5. दिलखुश गुर्जर, किशनगढ़, अजमेर
6. प्रियांशु शर्मा, लोसल, सीकर
7. विजयश्री उदावत, गिर्राजसर, बीकानेर
8. दीक्षिता जांगिड़, बिलाड़ा, जोधपुर
9. पीयूष सिंह गोहिल, भगवतगढ़, सवाईमाधोपुर
10. नेतल कंवर, गडरा रोड़, बाड़मेर

सही उत्तर
1. (क)
2. (क)
3. (क)
4. (ख)
5. (ग)
6. (ग)
7. (घ)
8. (ख)
9. (घ)
10.(घ)

**निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। ( बाल प्रश्नोत्तरी - 61 )**
(अपनी पासपोर्ट फोटो अवश्य वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( )3.( )4.( ) 5.( )6. ( )7.( )8.( ) 9.( )10.( )

नाम.....कक्षा.....पिता का नाम.....

उम्र..... पूर्ण पता.....

.....पिन.....मोबाइल.....

राजस्थान सरकार
GOVERNMENT OF RAJASTHAN

सान्याअवि

Alankit
अलंकित असाइनमेंट्स लिमिटेड
द्वारा प्रबंधित

# एल्डर लाइन

## नेशनल हेल्पलाइन फॉर सीनियर सिटिज़न
## राजस्थान

**ELDER LINE**
NATIONAL HELPLINE FOR SENIOR CITIZENS

*Call Toll-Free*
**14567**

**10 अगस्त 2024**
**से शुभारंभ**

टोल-फ्री नंबर
**14567**
कॉल करें

- भावनात्मक सहयोग
- दुर्व्यवहार संबंधित बचाव
- मार्गदर्शन संबंधित सहयोग
- जानकारी संबंधित सहयोग

**आपके अपने आपके लिए**

Address:
Lorem ipsum dolor sit amet, consectetur adipiscing elit, sed do eiusmod tempor incididunt

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार
बजट में रखा हर वर्ग का ध्यान
प्रगति पथ पर राजस्थान
श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री
श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री
माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में राजस्थान सरकार ने बजट के माध्यम से जनता से किये गये वादों को धरातल पर लाने का कार्य शुरू किया
इस साल सरकारी पदों पर 1 लाख से ज़्यादा भर्तियां, 5 साल में कुल 4 लाख भर्तियां
संशोधित पीकेसी-ईआरसीपी लिंक परियोजना - 26 हजार 800 करोड़ रुपए होंगे व्यय
2 लाख 8 हजार से अधिक घरों को आगामी 2 वर्षों में मिलेगा घरेलू बिजली कनेक्शन
5 वर्षों में 53000 कि. मी. सड़कों का नेटवर्क
2031-32 तक की ऊर्जा की मांग पूर्ति हेतु 2 लाख 25 हजार करोड़ रुपए की लागत के कार्य करवाया जाना प्रस्तावित।
मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य (MAA) Health Infrastructure Mission के तहत आगामी 3 वर्षों में 15 हजार करोड़ रुपये के कार्य
प्रदेश में गौवंश संरक्षण व संवर्द्धन की दृष्टि से चिन्हित गौशालाओं को देय अनुदान में 10 प्रतिशत की वृद्धि
इस वर्ष किसानों को 23 हजार करोड़ रुपए के ब्याज मुक्त अल्पकालीन फसली ऋण
इस वर्ष रू 15,000 करोड़ व्यय कर 25 लाख ग्रामीण घरों को नल से जल
15 लाख महिलाएं लखपति दीदी की श्रेणी में होंगी शामिल
डबल इंजन सरकार का संकल्प
आपणो अग्रणी राजस्थान
सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, राजस्थान
राजस्थान संवाद

पाक्षिक
पाथेय कण
(16-31 अगस्त,2024)
(10 अगस्त को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY 202/2024-26

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/WPP 01/2024-26

RAS- 2021
में 750+
Selections

Springboard
ACADEMY
AN INSTITUTE FOR IAS & RAS

RAS Foundation Batch

Offline
सेमिनार

RAS 2021 में चयनित अधिकारियों द्वारा मार्गदर्शन

26 अगस्त, सोमवार @ 10:15 AM

Online & Offline

27 अगस्त से बैच प्रारम्भ

Exclusive Live Batch from Classroom

Riddhi - Siddhi, Gopalpura Bypass, Jaipur
9636977490, 0141-3555948

ऐप डाउनलोड करने के लिए
QR Code स्कैन करें
GET IT ON Google Play

Connect with us- Springboard Academy Online Springboard Academy Jaipur

स्प्रिंगबोर्ड एकेडमी के IAS, RAS हेतु प्रमाणित क्लास नोट्स उपलब्ध The Notes Hub 7610010054, 7300134518

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
**सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल**
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 अगस्त, 2024 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,